PTEC

Monthly
NEWS LETTER

Volume 2 August, 2025 Issue 4

बिना संघर्ष के आज़ादी नहीं मिलती

मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। बिना संघर्ष के कोई भी उपलब्धि संभव नहीं है। इतिहास इसका सबसे बड़ा गवाह है। भारत की आज़ादी का उदाहरण ही हमारे सामने है। सैकड़ों वर्षों तक गुलामी झेलने के बाद हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने कठोर तपस्या, बलिदान और संघर्ष के बल पर स्वतंत्रता दिलाई। यदि उन्होंने कठिनाइयों का सामना न किया होता, तो आज हम स्वतंत्र भारत में सांस नहीं ले पाते।

संघर्ष हमें मज़बूत बनाता है और हमारी असली क्षमता को उजागर करता है। जैसे तितली को अपने कोये से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, तभी उसके पंख मजबूत होते हैं और वह उड़ पाती है। उसी तरह मनुष्य भी कठिनाइयों से जूझकर ही सफलता का आनंद ले सकता है।

बिना संघर्ष के जीवन ठहरा हुआ और अधूरा होता है। संघर्ष हमें परिश्रमी, धैर्यवान और आत्मनिर्भर बनाता है। आज़ादी हो या जीवन की कोई भी मंज़िल — हर बड़ी उपलब्धि के पीछे संघर्ष की कहानी छिपी होती है।

निष्कर्षतः, यह स्पष्ट है कि *संघर्ष ही आज़ादी और सफलता की असली कुंजी है।* जो लोग चुनौतियों से भागते हैं, वे कभी सच्ची आज़ादी और आत्मसंतोष का अनुभव नहीं कर सकते।

संपादक मंडल

"एक जीवन, जो आंदोलन बना; एक नाम जो झारखंड की आत्मा बनी।"

यह पंक्ति पूरी तरह चरितार्थ होती है श्री शिबू सोरेन जी पर पूरे झारखंडी समाज की आवाज़, संघर्ष और पहचान की गाथा है। जिनका जीवन सिर्फ एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि श्री शिबू सोरेन जी 'दिशोम गुरु' के नाम से प्रसिद्ध हैं- एक ऐसे जननेता, जिन्होंने आदिवासी अधिकारों, ज़मीन, जंगल और जल की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। झारखंड राज्य के निर्माण से लेकर उसके नेतृत्व तक, श्री शिबू सोरेन का योगदान अमिट है। उनका जीवन एक मिसाल है अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की, जनहित के लिए राजनीति की, और आत्म-सम्मान के लिए आंदोलन की। श्री शिबू सोरेन, जिन्हें सम्मानपूर्वक "दिशोम गुरु" या "गुरुजी" के नाम से जाना जाता है, झारखंड के एक प्रतिष्ठित आदिवासी नेता थे। उन्होंने अपना जीवन आदिवासी समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ने और अलग झारखंड राज्य की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया था.

1. प्रारंभिक जीवन और शिक्षा (Early Life and Education) श्री शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी, 1944 को तत्कालीन बिहार के रामगढ़ जिले (अब झारखंड में) के नेमरा गांव में हुआ था. उनका बचपन का नाम शिवलाल था, जिसे बाद में शिबू सोरेन के नाम से जाना जाने लगा. वह संथाल आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखते थे. उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गोला हाई स्कूल, हजारीबाग से प्राप्त की थी.
जब वह स्कूल में थे, तब उनके पिता सोबरन सोरेन की कथित तौर पर साहूकारों द्वारा हत्या कर दी गई थी. इस दुखद घटना ने उन्हें आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने और साहूकारों के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़कर आदिवासियों को जागरूक करने और एकजुट करने का संकल्प लिया.

2. सामाजिक सक्रियता और प्रारंभिक आंदोलन (Social Activism and Early Movements) श्री शिबू सोरेन 1962 में, जब वह केवल 18 वर्ष के थे, तो उन्होंने संथाल नवयुवक संघ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य आदिवासी युवाओं को सामाजिक बदलाव के लिए संगठित करना था. उन्होंने धनकटनी आंदोलन भी शुरू किया, जिसका लक्ष्य आदिवासियों को साहूकारों के शोषण से मुक्ति दिलाना था. उन्होंने आदिवासी भूमि अधिकारों और जंगल के संरक्षण के लिए वकालत की. उन्होंने सामूहिक खेती, पशुपालन और रात्रि पाठशाला जैसे कार्यक्रम भी चलाए, उनका संघर्ष आदिवासियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान और आत्म-सम्मान के लिए प्रेरित करने का एक प्रतीक बना.

3. झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना (Formation of Jharkhand Mukti Morcha) 1972 में, श्री शिबू सोरेन ने वामपंथी ट्रेड यूनियन नेता ए. के. रॉय और कुर्मी महतो नेता बिनोद बिहारी महतो के साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना की थी. महतो उस समय पार्टी

के अध्यक्ष बने और श्री शिबू सोरेन को महासचिव के रूप में नियुक्त किया गया. इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य आदिवासियों के लिए न्याय, भूमि अधिकार और अलग झारखंड राज्य की स्थापना करना था. झारखंड क्षेत्र में सामंती शोषण के खिलाफ ज़मीनी स्तर पर लामबंदी ने उन्हें आदिवासी समुदाय के बीच एक प्रतीक के रूप में स्थापित किया.

4. राजनीतिक करियर और उपलब्धियाँ (Political Career and Achievements) श्री शिबू सोरेन 1980 में पहली बार दुमका से लोकसभा के लिए चुने गए थे. इसके बाद उन्होंने सात बार 1989-1998 और 2002-2019 तक दुमका से लोकसभा चुनाव जीता. राज्यसभा सदस्य (Member of Rajya Sabha) वह 2002 में कुछ समय के लिए और फिर जून 2020 से 2025 में अपने निधन तक राज्यसभा के सदस्य रहे. एक प्रभावशाली राजनीतिक नेता के रूप में, उन्होंने राष्ट्रीय मंच पर आदिवासी समुदाय की आवाज़ उठाई.
श्री शिबू सोरेन 2004 और 2006 के बीच यूपीए सरकार में केंद्रीय कोयला मंत्री भी रहे. उन्होंने तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया: 2005 में 10 दिनों के लिए, अगस्त 2008 से जनवरी 2009 तक, और दिसंबर 2009 से मई 2010 तक.
झारखंड राज्य के गठन में दिशोम गुरु शिबू सोरेन की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिसे 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग करके बनाया गया था. आदिवासी अधिकारों के लिए आवाज़ (Voice for the Tribal Rights) उन्होंने भूमि अधिकारों, सामाजिक समानता और गरीब समुदायों के कल्याण के लिए मज़बूती से आवाज़ उठाई थी.

5. संघर्ष और चुनौतियाँ (Struggles and Challenges) दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन का राजनीतिक जीवन संघर्षों और चुनौतियों से भरा था. उन्हें अपने पूर्व निजी सचिव शशि नाथ झा की 1994 की हत्या में कथित संलिप्तता के लिए दिल्ली की एक अदालत ने दोषी ठहराया था. उन्हें 2004 में केंद्रीय कोयला मंत्री रहते हुए, 1975 के चिरुडीह मामले में गिरफ्तारी वारंट के बाद इस्तीफा देना पड़ा था, जिसमें उन पर 10 लोगों की हत्या का आरोप था. बाद में उन्हें जमानत मिल गई थी और उन्हें फिर से मंत्रिमंडल में शामिल किया गया था. इन कानूनी चुनौतियों ने उनके राजनीतिक करियर पर गहरा प्रभाव डाला था.

6. अंतिम जीवन और विरासत (Later Life and Legacy) दिशोम गुरु शिबू सोरेन लंबे समय से बीमार चल रहे थे और उन्हें किडनी संबंधी बीमारी थी. उन्हें जून 2025 में दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया था. 4 अगस्त, 2025 को 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया. उनके निधन से झारखंड की राजनीति में एक युग का अंत हो गया. उन्हें आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ने और झारखंड राज्य के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए याद किया जाएगा.

दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन का जीवन झारखंड के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने अपने जीवन को आदिवासी समुदायों के उत्थान और झारखंड के विकास के लिए समर्पित कर दिया। वह एक संघर्षशील नेता थे, जिन्होंने अपने समुदाय के लिए आवाज़ उठाई और उनके अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी.

एक आवाज़ जो सदियों तक गूंजती रहेगी, आज मौन हो गई। 'दिशोम गुरु', सिर्फ एक नाम नहीं था - वह आदिवासी अस्मिता, संघर्ष और स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक थे। उन्होंने ज़मीन से जुड़कर, ज़मीन के लिए लड़ना सिखाया। उन्होंने जंगल, जल और ज़मीन की भाषा बोली और अपने लोगों को वह हक़ दिलाया, जो वर्षों से छीना जा रहा था। उनकी आँखों में आदिवासियों के भविष्य का सपना था, और उनके कदमों में आंदोलन की आग। उनकी एक पुकार पर हजारों लोग उठ खड़े होते थे क्योंकि वह केवल नेता नहीं, मार्गदर्शक थे।

आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका जीवन, उनका संघर्ष और उनके विचार हमेशा हमारी आत्मा में जीवित रहेंगे। उनका दिखाया रास्ता न्याय, आत्मगौरव और एकता का हमारे लिए दीपस्तंभ बना रहेगा। झारखंड की धरती उन्हें सदैव याद रखेगी। जनजातीय समाज उन्हें हमेशा 'दिशोम गुरु' के रूप में पूजेगा। 'दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन, आपकी आत्मा को अनंत शांति मिले।"

विश्व आदिवासी दिवस

विश्व आदिवासी दिवस प्रतिवर्ष 9 अगस्त को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य मुख्य रूप से आदिवासी समाज की कला, वेशभूषा, भाषा, संस्कृति एवं परंपराओं को संरक्षित और प्रोत्साहित करना है। इसी क्रम में हमारे महाविद्यालय में भी विश्व आदिवासी दिवस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विभिन्न जनजातियों जैसे- उरांव, खड़िया, गुण्डा, संथाल आदि के लोग शामिल हुए। सभी ने अपनी-अपनी पारंपरिक भाषाओं—जैसे हो, खोरठा आदि—में गीत, नृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। इन कार्यक्रमों में पारंपरिक वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनियों और लोकगीतों ने पुराने दिनों की याद ताजा कर दी।

सभी प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी पारंपरिक वेशभूषा धारण की हुई थी, जिससे कार्यक्रम में रंग और भी निखर आया। मंच पर प्रस्तुत नृत्य, गीत और सामूहिक कार्यक्रमों में उत्साह और ऊर्जा भरपूर थी।

अंत में, परंपराओं और अधिकारों की रक्षा के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी प्रस्तुत किए गए, जिनका पालन हमारे समाज के लिए आवश्यक है।

पौलुस केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'अ'

विश्व आदिवासी दिवस

यदि मुझे अपने बिताए हुए दिनों में से किसी एक को फिर से जीने का अवसर मिले, तो वह निश्चित रूप से *विश्व आदिवासी दिवस* होगा। इस दिन का इंतजार हम सभी बड़े उत्साह से कर रहे थे। मुझे यह दिन एक नई ऊर्जा और रौनक के साथ शुरू करने का अवसर मिला, क्योंकि हमारे महाविद्यालय में इसे प्रस्तुत करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में विभिन्न जनजातियों जैसे—कुड़ूख, उरांव, खड़िया, संथाल, हो एवं खोरठा—की सांस्कृतिक झलकियां प्रस्तुत की गईं। अलग-अलग रीति-रिवाजों, पारंपरिक नृत्यों, गीतों और वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनियों ने माहौल को और भी जीवंत बना दिया। हर प्रस्तुति से यह सीख मिली कि प्रत्येक समुदाय की संस्कृति अद्वितीय और सुंदर है।

इन विविधताओं को देखकर मेरे भीतर भी अपनी संस्कृति के प्रति गर्व की भावना और प्रबल हो गई। एक आदिवासी होने के नाते मैं गर्व से कह सकती हूँ कि हमारा समुदाय अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस दिन का समापन हर्षोल्लास से भरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हुआ, जिसने सभी के दिलों में अविस्मरणीय यादें छोड़ दीं।

मोनिका लकड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

विश्व आदिवासी दिवस

विश्व आदिवासी दिवस हर साल 9 अगस्त को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य दुनिया भर के मूल निवासियों के अधिकारों को बढ़ावा देना, उनकी विशिष्ट संस्कृतियों, भाषाओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक योगदान का सम्मान करना है। यह दिन विशेष रूप से आदिवासियों के अधिकारों और उनके अस्तित्व के संरक्षण के लिए मनाया जाता है, ताकि उनकी परंपराएं और सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रह सके।

इस अवसर पर विभिन्न भाषाएँ और पारंपरिक प्रस्तुतियाँ देखने को मिलती हैं। 9 अगस्त 2025 को हमारे महाविद्यालय में भी *विश्व आदिवासी दिवस* का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न भाषा-भाषी लोगों ने अपनी मातृभाषा, पारंपरिक ताल, और संस्कृति का नृत्य प्रस्तुत किया। मांदर, ढोलक, नगाड़ा की गूंज से पूरा वातावरण आनंदित हो उठा। मुंडा, खड़िया, हो, कुड़ुख, खोरठा, संथाली आदि जनजातियों के लोगों ने अपनी संस्कृति की झलक प्रस्तुत की, जिसने अनेक भाषाओं के बीच एकजुटता का सुंदर संदेश दिया।

आदिवासी हमेशा से प्राकृतिक संरक्षक माने जाते हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक सौहार्द को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रखा है।

निरूपा टेटे
प्रथम वर्ष 'अ'

विश्व आदिवासी दिवस अनुभव

विश्व आदिवासी दिवस इस महाविद्यालय में मनाकर मैं अत्यंत खुश हूँ। यहाँ का वातावरण बहुत ही अलग और मनमोहक था। कार्यक्रम में कई विशेष बातें थीं, लेकिन मुझे सबसे ज़्यादा अच्छा अलग-अलग जातियों के सांस्कृतिक नृत्य और प्रस्तुतियाँ देखना लगा। इन प्रस्तुतियों ने मेरा दिल खुशी से भर दिया और मुझे बहुत आनंद मिला।

विशेष रूप से, मुझे उरांव संस्कृति की अगुवाई करने और अपने समूह को नृत्य में नेतृत्व देने का अवसर मिला। यह मेरे लिए गर्व और खुशी का क्षण था। कहा जाता है कि अवसर मिलने पर उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए, और मैंने भी इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। यह अनुभव हमेशा मेरी यादों में रहेगा।

नैन्सी मिंज
प्रथम वर्ष 'अ'

विश्व आदिवासी दिवस

जंगल बिना जीवन अधूरा है, और आदिवासी बिना जंगल अंधेरा है।
जल, जंगल और जमीन ही आदिवासी की असली पहचान है।

हमारे शिक्षक महाविद्यालय में 9 अगस्त 2025 को *विश्व आदिवासी दिवस* बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत से पहले यह बताया गया कि आदिवासी समुदाय में कौन-कौन सी जातियाँ आती हैं — जैसे उराँव, मुंडा, खड़िया, हो, संथाली और खोरठा आदि।

सभी भाई-बहनों ने अपने नृत्यों और गीतों के बारे में जानकारी दी — किस मौसम या पर्व में कौन-सा गीत गाया जाता है, उसका महत्व और परंपरा। इससे मुझे आदिवासी संस्कृति के बारे में नई जानकारी मिली।

मंच पर महिलाओं ने नृत्य के साथ-साथ अपनी मधुर आवाज़ और नगाड़ा, मंदर, ढोलक की ताल पर *रना रेण* नृत्य प्रस्तुत किया। यह देखकर स्पष्ट हुआ कि आदिवासी परंपरा आज भी जीवंत है और हमारी एकता, प्रेम, स्नेह और उत्साह में झलकती है।

विश्व आदिवासी दिवस का उद्देश्य न केवल दुनिया भर के आदिवासियों के अधिकारों, बल्कि उनके जल, जंगल, जमीन और पर्यावरण को संरक्षण देने के साथ-साथ उनकी सामाजिक, आर्थिक और न्यायिक सुरक्षा को बढ़ावा देना है। यही कारण है कि हर वर्ष 9 अगस्त को यह दिवस मनाया जाता है।

प्रीति आइन्द
प्रथम वर्ष 'ब'

विश्व आदिवासी दिवस

हर साल की भांति इस बार भी हमारे महाविद्यालय में *विश्व आदिवासी दिवस* बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सोशल मीडिया के माध्यम से सभी ने एक-दूसरे को इस दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उस दिन महाविद्यालय का माहौल बिल्कुल अलग था। सामान्य कक्षाओं की जगह सांस्कृतिक माहौल छा गया था। सभी विद्यार्थी पारंपरिक नगाड़ा और विशेष वेशभूषा में सजे हुए थे। उनके चेहरों पर खुशी साफ झलक रही थी।

हमारे महाविद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के विद्यार्थी पढ़ते हैं — संथाली, उराँव, खड़िया, गोंड, खोरखा आदि। मैं स्वयं उराँव जाति से हूँ और गर्व महसूस करता हूँ कि यहाँ उराँव जाति के विद्यार्थियों की संख्या भी अधिक है। सभी ने अपने-अपने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए। इन नृत्यों और गीतों में *विविधता में एकता* की झलक साफ दिखाई दी।

इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें यह अनुभव हुआ कि आदिवासी समुदाय अपने पूर्वजों की परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को आज भी संजोए हुए है। यह दिवस न केवल हमारी पहचान को याद दिलाता है, बल्कि हमें अपनी संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने की प्रेरणा भी देता है।

जय जोहार, जय आदिवासी!

अंकित कुजूर

विश्व आदिवासी दिवस

रिमझिम बारिश की बूंदों के साथ वह सुहानी सुबह आई, जिसने पूरे दिन को मधुरता और उमंग से भर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत ***"जय जोहार, जुग-जुग जीवो आदिवासी"*** के नारों के साथ हुई, और झारखंड की माटी की महक के बीच आदिवासी होने का गर्व अपने आप हृदय में उमड़ पड़ा।

इस दिन का इंतजार मैं स्कूल के दिनों से ही कर रही थी। अंततः इस बार मुझे *विश्व आदिवासी दिवस* मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर विभिन्न जनजातियों के पारंपरिक पहनावे, रीति-रिवाज, नृत्य, और लोकगीतों की सुंदर प्रस्तुतियों ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। हर समुदाय की मधुर वाणी, सामूहिक जोश और मेहनत में एक अनोखी एकता दिखाई दी।

शिक्षा: इस आयोजन से मैंने सीखा कि हमें अपनी भाषा, संस्कृति, और परंपराओं के प्रति गर्व महसूस करना चाहिए और अपने समुदाय में एकता की भावना को सदैव बनाए रखना चाहिए।

मरियम होरो
प्रथम वर्ष 'अ'

ड्रॉइंग क्लास का अनुभव

हमारे लिए ड्रॉइंग क्लास का अनुभव बहुत ही रोचक रहा। तीन दिनों तक हमने अलग-अलग तरीकों से चित्र बनाना सीखा। कभी गोल आकृतियाँ बनाई, तो कभी सीधे-टेढ़े आकार बनाकर सुंदर-सुंदर चित्र तैयार किए।

किसी ने लड़की का चित्र बनाया, तो किसी ने प्रकृति का। तीसरा दिन हमारे लिए सबसे मज़ेदार था — उस दिन हमने चेहरों की ड्रॉइंग बनाई। किसी ने चेहरा गोरा बनाया, किसी ने सांवला, किसी के बाल घुँघराले थे तो किसी के दो चोटी वाली स्टाइल। कुछ चेहरों को देखकर तो हम सब हँसते-हँसते लोटपोट हो गए।

इस तरह हँसी-खुशी में तीन दिन कब बीत गए, पता ही नहीं चला। यह अनुभव हमारे लिए यादगार रहेगा।

जया तिग्गा
प्रथम वर्ष 'A'

ड्रॉइंग क्लास का अनुभव

जब हमें ड्रॉइंग क्लास के बारे में बताया गया तो मैं बहुत खुश हुई, क्योंकि लंबे समय बाद ड्रॉइंग बनाने का मौका मिल रहा था। शुरुआत में मुझे लगा कि शायद मैं अच्छा चित्र नहीं बना पाऊँगी, फिर भी मैंने उत्साह के साथ भाग लिया।

पहले दिन थोड़ी झिझक थी, लेकिन दूसरे दिन जब रंग भरने का काम शुरू हुआ, तो मज़ा आने लगा। सर ने हमें अलग-अलग प्रकार की ड्रॉइंग बनाने और उन्हें सुंदर तरीके से रंगने के कई तरीके सिखाए। कभी-कभी चित्र बनाना थोड़ा कठिन लगता था, फिर भी हम सभी ने प्रयास जारी रखा।

तीन दिनों की यह क्लास मेरे लिए बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। हो सकता है कि मेरी ड्रॉइंग और रंग भरने की कला पूरी तरह परफेक्ट न हो, लेकिन मैंने बहुत कुछ नया सीखा और मज़ा भी आया।

माधुरी तिर्की
प्रथम वर्ष 'अ'

ड्रॉइंग का अनुभव

ड्रॉइंग एक ऐसी कला है, जिसे मैंने इस कार्यशाला के दौरान और गहराई से समझा। तीन दिनों की इस कक्षा में मैंने सीखा कि चित्र किस प्रकार बनाए जाते हैं और उनमें रंग भरने की सही तकनीक क्या होता है।

चित्रकला ने मुझे न केवल आनंद का अनुभव कराया, बल्कि तनाव और चिंताओं से मुक्त भी किया। चित्र बनाना और उनमें रंग भरना ऐसा लगा मानो जीवन में नई ऊर्जा और खुशियाँ भर दी गई हों। इसने मुझे यह भी सिखाया कि जैसे हम चित्रों में रंग भरते हैं, वैसे ही हम अपने और दूसरों के जीवन में भी सकारात्मकता और रंग भर सकते हैं।

मरियम गोरेती डुंगडुंग,
प्रथम वर्ष 'ब'

Drawing Class का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में तीन दिनों का *चित्रकला क्लास* आयोजित हुआ। इसमें सर अब्राहम ने हमें प्रकृति का चित्र कैसे बनाना और उसे सुंदर तरीके से पेंट करना है, यह सिखाया।

पहले मुझे चित्र बनाना बहुत मुश्किल लगता था, लेकिन सर ने हमें आसान तरीकों से ड्रॉइंग बनाना सिखाया। उन्होंने हमें *ग्राफ विधि* द्वारा चित्र बनाना सिखाया, जो मेरे लिए पहली बार था। यह विधि मुझे बहुत अच्छी और आसान लगी।

इन तीन दिनों में मैंने कई चित्र बनाए और पेंट किए। पहले मुझे पेंट करना भी नहीं आता था, लेकिन सर की मदद से मैंने यह भी सीख लिया। अब मुझे लगता है कि मैं चित्रकला में पहले से कहीं बेहतर हो गई हूँ।

यह तीन दिन का अनुभव मेरे लिए बेहद अच्छा और यादगार रहा।

उषा किरण
प्रथम वर्ष 'ब'

Art & Craft Experience

"When we determine our goal, Art becomes the beauty of our soul."

I would like to share my *Art & Craft* experience which was held for three days, from 6th to 8th August, 2025. I was truly inspired by Sir Abraham, an experienced painter, whose guidance helped me rediscover the hidden beauty in pictures that connect deeply with real life.

This workshop encouraged me to be courageous, to stay alert, and to never lose hope in life. It taught me that, no matter what challenges we face, we must not give up. Instead, we should wake up, stand strong, and struggle to overcome the problems.

Art, I realized, is a powerful tool to express our inner feelings and to confront even our painful moments. It helps us accept our dark sides, improves our mental ability, and sharpens our thinking capacity. Through art, we can turn emotions into expressions and thoughts into beauty.

Therefore, I can say that *Art is the true inner part of our mind.* It is the mirror of our soul, a language beyond words. Truly, *Art is Beauty, and Beauty is the soul of wit.*

Rajni Xalxo
2nd Year 'B'

चित्रकला

अगस्त का महीना आया
तीन दिवसीय चित्रकला का कार्यक्रम आया।
प्राचार्य है महान
जिसने कौशल को बढ़ावा दिया।
सुनहरा अवसर लाया
उत्साह चित्रकारी को लाया
छुपी कलाकृति को जागृत किया।
मन में उमंग
हाथ में जोर
कागज की टुकड़ों में
रंगत लाने को
पेंसिल की लकीरों से
चित्रित किया रंग-बिरंगे
फल-फूल और प्रकृति के
मनमोहक दृश्य को
कठिनाईयों थी चित्रकारी में
ललक थी सीखने की
किया वादा हम कर सकते
रंगों के मिलावट से
बने आकर्षक पेंटिंग
जिसने जीवन डाला
फीका कागजों में।

दीप्ति केरकेटटा
प्रथम वर्ष 'अ'

Drawing Class का अनुभव

तीन दिवसीय *ड्रॉइंग क्लास* मेरा दूसरा अनुभव था। पिछले वर्ष भी मैंने इस क्लास में भाग लिया था और उस समय भी बहुत आनंद आया था, लेकिन इस बार मैंने और भी नई बातें सीखीं।

इस क्लास में हमें लोगों के चेहरे बनाना सिखाया गया। शुरुआत में मुझे लगा कि मैं शायद सही चित्र नहीं बना पाऊँगी, लेकिन मैंने कोशिश नहीं छोड़ी और अपनी कला का पूरा प्रदर्शन किया।

जब हमारी बनाई हुई ड्रॉइंग्स प्रदर्शित की गईं, तो कई लोगों ने उनकी तारीफ़ की। कुछ विद्यार्थियों ने मेरी प्रशंसा में पुल बाँध दिए, जिससे मुझे और भी उत्साह मिला।

यह तीन दिन का अनुभव मेरे लिए न सिर्फ़ सीखने का अवसर था, बल्कि अपनी कला को निखारने का भी एक सुनहरा मौका।

शिखा कुमारी
द्वितीय वर्ष 'ब'

Three Days of Drawing: My Creative Journey

Day 1: Joy and Discovery

On the first day of the drawing class, I felt an overwhelming sense of happiness. As soon as I started sketching, I discovered my deep enjoyment for the process. It was the first time that I truly engaged with drawing—and the moment I met the instructor; I was struck by his profound knowledge and creativity. Learning from someone so inspiring made me even more enthusiastic.

Day 2: Challenges and Inspiration

The second day was a mixture of determination and frustration. Some drawings were difficult and even boring to attempt. I struggled with the lines, shapes, and ideas—I almost lost interest. Yet, the instructor's laughter and warmth were infectious. His joy and passion for art reignited my own. Watching how the drawings live and breathe inspired me to push through my doubts.

Day 3: Effort and Satisfaction

On the final day, I focused intently on drawing the figure of a girl. At first, choosing and blending colours felt dull and awkward—I couldn't quite place them right. But I kept trying, revising my strokes and colour choices. Then, finally, everything clicked. I completed the drawing beautifully. Overwhelmed by a wave of happiness, I realized how much I genuinely enjoyed creating art.

Reflection

These three days took me on an emotional rollercoaster—from eager excitement, through struggle, to wholehearted pride. First, there was sheer joy; then, a pause where doubt almost took over; finally, a triumph born of persistence. It taught me that creative expression isn't always effortless—but the reward at the end is deeply fulfilling.

Beronika Hembrom
1st year 'A'

ड्राइंग क्लास का अनुभव

"स्केचिंग अपने आप आ जाएगी, जिस दिन तुम्हें असल में पेंसिल से मोहब्बत हो जाएगी।"

ड्राइंग क्लास का अनुभव मेरे लिए बेहद रोचक और फायदेमंद रहा। इस कक्षा में मुझे आकारों, रंगों और कल्पना की शानदार दुनिया में खो जाने का अवसर मिला। अपनी भावनाओं को कागज पर उतारने का अनुभव अद्भुत रहा।

ड्राइंग क्लास ने न केवल मेरे अंदर कला के प्रति प्रेम बढ़ाया, बल्कि मुझे नए कौशल सिखाए। इसने तनाव को कम करने, मन को शांत रखने और एकाग्रता बढ़ाने में भी मदद की।

कुल मिलाकर यह कक्षा मेरे लिए मजेदार, रचनात्मक और सकारात्मक अनुभव रहा।

ब्यूटी केरकेटटा
प्रथम वर्ष 'अ'

चित्रकला अनुभव

चित्रकला एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से हम अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह मेरा पाँच वर्षों में तीसरा अनुभव रहा, और इस दिन चित्रकला की कक्षा में भाग लेकर मुझे बहुत आनंद आया।

इस कक्षा में मैंने सीखा कि एक चित्र कैसे बनाया जाए, उसमें रंग और शेडिंग कैसे डाली जाए, और चित्रांकन की बारीकियों पर ध्यान कैसे दिया जाए। यह अनुभव मेरे लिए बहुत उपयोगी रहा। मेरा मानना है कि ऐसी चित्रकला कक्षाओं को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए, ताकि हम प्रशिक्षण के साथ-साथ कला को भी अच्छे से सीख सकें।

एक भावी शिक्षक के रूप में यह अनुभव मेरे लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि विद्यालय में पढ़ाते समय हमें छात्रों को विभिन्न विषयों के साथ-साथ रचनात्मक गतिविधियों की ओर भी मार्गदर्शन देना होता है। यदि हर महीने चित्रकला की कक्षा आयोजित हो, तो हम बेहतर चित्र बना सकेंगे और छात्रों को भी अधिक प्रभावी ढंग से समझा पाएंगे।

चित्रकला न केवल हमारी सृजनात्मकता को विकसित करती है, बल्कि हमें एक संवेदनशील और प्रेरणादायी शिक्षक बनने की दिशा में भी अग्रसर करती है।

डिबर संडी पूर्ति
प्रथम वर्ष 'अ'

चित्रांकन

चित्रांकन एक ऐसी कला है, जो पेंसिल और रंगों के माध्यम से कागज पर अभिव्यक्त की जाती है। इस विषय से संबंधित तीन दिवसीय कार्यशाला में भाग लेने का अवसर हमें मिला। इन तीन दिनों में हमने चित्रकला के विभिन्न रूपों को समझा और अभ्यास किया।

कभी-कभी रंगों को मिलाने और पेंटिंग तैयार करने में कठिनाइयाँ भी आईं, क्योंकि इससे पहले हमने इस प्रकार से चित्रांकन नहीं किया था। फिर भी निरंतर अभ्यास और मार्गदर्शन से हम इन चुनौतियों का सामना कर सके।

इस अनुभव ने मुझे चित्रकला सीखने और उसे समझने में बहुत मदद की। मैं इस अवसर के लिए हृदय से आभारी हूँ।

इरीना बरवा,
प्रथम वर्ष 'अ'

चित्रकला कार्यशाला: मेरी छुपी प्रतिभा का उजागर होना

हम सभी में कुछ कलाएँ जन्मजात होती हैं, जबकि कुछ कलाएँ अभ्यास और समर्पण से विकसित होती हैं। इसी प्रकार, मुझमें भी कई छुपी हुई प्रतिभाएँ थीं, जिनमें से एक थी चित्रकला। इस कला का नाम सुनते ही मेरे मन में एक अजीब सी हलचल होने लगती थी, शायद आत्म-संदेह के कारण।

हाल ही में, मैंने एक तीन दिवसीय चित्रकला कार्यशाला में भाग लिया, जिसने मेरे भीतर की इस छुपी कला को उजागर किया। इस कार्यशाला ने मेरे डर और संकोच को दूर कर, मेरी रचनात्मकता को नया आयाम दिया। अब मैं न केवल प्रकृति में मौजूद पेड़-पौधों को, बल्कि उससे भी सुंदर चित्रों की कल्पना कर उन्हें साकार कर सकती हूँ।

इस अनुभव ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि मेहनत और सही मार्गदर्शन से कोई भी कला सीखी जा सकती है। चित्रकला के प्रति मेरी रुचि अब और भी गहरी हो गई है।

तनवी केरकेट्टा
द्वितीय वर्ष 'अ'

ड्राइंग क्लास का अनुभव

ड्राइंग क्लास का अनुभव मेरे लिए अत्यंत उपयोगी और आनंददायक रहा। इस कक्षा में मैंने रेखाओं, आकृतियों और छायांकन की तकनीकों के बारे में सीखा। इन बुनियादी बातों ने आगे चलकर जटिल चित्रों को बनाने की दिशा में मेरी एक मजबूत नींव तैयार की।

इस कक्षा ने मुझे अपनी रचनात्मकता को नए तरीकों से व्यक्त करने का अवसर दिया। मैंने विभिन्न शैलियों और तकनीकों के साथ प्रयोग किया और धीरे-धीरे अपनी अनूठी शैली विकसित करने में सफल हुआ।

कुल मिलाकर, ड्राइंग क्लास ने न केवल मेरी कला को निखारा, बल्कि मुझे आत्मविश्वास भी प्रदान किया।

चिरंजीत बा,
प्रथम वर्ष 'ब'

Drawing Class Experience

I would like to share my three-day experience of the Drawing Class conducted by Sir Abraham.

First of all, I feel proud of myself for being a student at PTEC, where we get so many opportunities to learn, to teach, and to grow in life. Attending this class gave me a wonderful chance to draw different kinds of pictures, which made me very excited and motivated.

Through this class, I have improved a lot in drawing and painting. I believe that I am capable of learning and handling any creative task given to me. Although Sir Abraham was not able to supervise closely all the time, his guidance and instructions inspired me to put in my best effort and to develop a deeper interest in drawing.

This Drawing Class has truly benefited me, and I feel it will help me in the future to teach my students in a better and more creative way.

Santrima Lakra
2nd Year (B)

15th August

On this Independence Day, I was feeling very proud of our nation as we hoisted the national flag. The celebration was held together with the middle school, St. Xavier's High School, and our college, PTEC. I had the opportunity to participate in the march-past, saluting the national flag with great zeal and enthusiasm. The event also brought back memories of the national heroes and freedom fighters who sacrificed their lives for our country.

During the program, our group presented a patriotic song in collaboration with students from the middle school, St. Xavier's High School, and PTEC College. In the end, we all raised slogans for the nation and paid tribute to our national heroes.

Prince Kujur
2nd Year A

Independence Day Experience

On 15th August 2025, we celebrated the 79th Independence Day, remembering our freedom from British rule and the sacrifices of our freedom fighters.

The day began with a holy mass, followed by the flag hoisting by our chief guest, Rev. Fr. P. J. James. After that, we had the march-past, patriotic speeches, and cultural programs. Among them, I especially liked a speech expressed through poetry, which was very inspiring.

This Independence Day was a memorable experience for me, filling me with pride and motivating me to serve my nation.

Albin Kiro
First Year 'A'

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त हमारा राष्ट्रीय पर्व है, जो हमें 200 वर्षों की गुलामी से मुक्ति की याद दिलाता है। इस दिन हम अपने वीर स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हैं और देश के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करते हैं।

15 अगस्त 2025 को हमारे प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुड़वा में ध्वजारोहण का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि फा. डॉ. पी. जे. जेम्स ने तिरंगा फहराया। इसके बाद भव्य परेड और देशभक्ति से भरे सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिनमें गीत, नृत्य और नाटक शामिल थे।

इस अवसर से मुझे शिक्षा मिली कि हमें सदैव अपने देश की एकता, अखंडता और देशप्रेम की भावना को बनाए रखना चाहिए।

जय हिन्द! जय भारत!

विल्सन खेस
द्वितीय वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

15 अगस्त हम सभी देशवासी हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस वर्ष हमने 79**वां स्वतंत्रता दिवस** बड़े उत्साह से मनाया। सभी की उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि हम अपने राष्ट्र की आज़ादी के प्रति सचेत और सजग हैं।

इस अवसर पर मुझे **"हमें आज़ादी कब मिलेगी"** शीर्षक वाले नाटक में भाग लेने का अवसर मिला। नाटक में मैंने एक **ग्रामवासी** का किरदार निभाया। शुरुआत में अभ्यास करने में कठिनाई हुई, लेकिन निरंतर अभ्यास और सभी साथियों के सहयोग से हम नाटक को सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर पाए। अपने किरदार में मैंने एक ग्रामवासी के अधिकारों की रक्षा करते हुए अनाज की तस्करी करने वाले अधिकारी से संघर्ष किया। यह अनुभव मेरे लिए बहुत खास रहा।

इस नाटक से मुझे यह सीख मिली कि किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निरंतर अभ्यास और मेहनत आवश्यक है। हमें अपनी **निरंतरता और दृढ़ संकल्प** बनाए रखना चाहिए।

अनिल डुंगडुंग
प्रथम वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

हमारे प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गुड़वा में स्वतंत्रता दिवस बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। इस राष्ट्रीय पर्व का शुभारंभ मिस्सा पूजा से हुआ, जो अत्यंत भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ।

पूजा के तुरंत बाद महाविद्यालय प्रांगण में झंडोत्तोलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर PTEC के सभी प्रशिक्षणार्थी एवं दोनों विद्यालयों के विद्यार्थी शांतिपूर्वक पंक्तिबद्ध खड़े रहे। मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानपूर्वक राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। तत्पश्चात सभी ने बड़े आदर और श्रद्धा के साथ राष्ट्रीय गान गाया। उस समय सभी के चेहरों पर देशभक्ति, गर्व और समर्पण की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उन वीर शहीदों को नमन किया, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर किए थे। उनके सम्मान में परेड का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने अनुशासन और भक्ति भाव के साथ भाग लिया। परेड का प्रदर्शन अत्यंत शानदार और आकर्षक रहा।

परेड के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों और विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, नृत्य, नाटक और झांकी प्रस्तुत कर सभी के हृदय को देशप्रेम से भर दिया। इन प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया और सभी के भीतर देश के प्रति श्रद्धा, प्रेम और उत्साह को और प्रबल कर दिया।

इस प्रकार बड़े ही उत्साह, भक्ति और सम्मान के साथ स्वतंत्रता दिवस का यह पर्व सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सिगिन मुंडा
द्वितीय वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

15 अगस्त हमारे देश का वह पावन दिवस है, जब हमें आज़ादी और वीर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों की याद आती है। यह दिन हर भारतीय के हृदय में गर्व और देशभक्ति की भावना जगाता है।

हमारे महाविद्यालय में भी यह दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सबसे पहले पवित्र मिस्सा पूजा हुई, जिसके बाद मुख्य अतिथि ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गान गाया। इसके पश्चात अनुशासनपूर्ण परेड और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिनमें गीत, नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए गए।

यह अनुभव मेरे लिए बेहद खास रहा। इसने मुझे सिखाया कि स्वतंत्रता केवल आज़ादी की पहचान ही नहीं, बल्कि यह हमारे शहीदों की वीरता और त्याग का प्रतीक भी है।

अमृता खलखो
प्रथम वर्ष 'अ'

15 अगस्त का अनुभव

15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश स्वतंत्र हुआ। यह दिन प्रत्येक भारतीय को एक नई शुरुआत और स्वतंत्रता की याद दिलाता है। यह दिवस हमें भारतीय होने के गौरव का विशेष स्मरण कराता है।

इसी स्मरण में हमारे महाविद्यालय में भी 15 अगस्त 2025 को स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। प्रातः 7:30 बजे मिस्सा पूजा का आयोजन हुआ, जिसका अनुष्ठान *फा. जोन तिर्की द्वारा* किया गया।

मिस्सा समाप्त होने के बाद सभी छात्र-छात्राएँ महाविद्यालय के प्रांगण में एकत्र हुए। सबसे पहले लीडर के द्वारा कमांड दिया गया, फिर सम्मानपूर्वक ध्वजारोहण किया गया और सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गान बड़े आदर और गर्व के साथ गाया। इसके बाद परेड का आयोजन हुआ। परेड में सभी छात्र-छात्राएँ अनुशासन के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रहे थे। परेड में बैंड ग्रुप भी सम्मिलित था, जिससे कार्यक्रम और भी आकर्षक लग रहा था।

परेड के पश्चात सभी विद्यालयों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन कार्यक्रमों में गीत, नृत्य और झाँकियों के माध्यम से देशभक्ति की भावना को जीवंत किया गया। विशेषकर झाँकी में यह दर्शाया गया कि भले ही हमारा देश आज़ाद हो चुका है, परंतु हमें अपने जीवन में सच्ची आज़ादी और मानवता की ओर बढ़ना चाहिए। यह प्रस्तुति बहुत प्रभावशाली लगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद सभी ने मिलकर देशभक्ति के नारे लगाए।

इस पूरे आयोजन से मन आनंदित हो उठा। मैं यही कहना चाहूँगी कि आने वाले वर्षों में भी हम सभी को 15 अगस्त इसी उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए।

अनिशा एक्का
प्रथम वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

हमारा देश **15 अगस्त 1947** को आज़ाद हुआ। तभी से हम सभी भारतवासी इस दिन को **हर्ष और उल्लास** के साथ मनाते हैं तथा वीर सेनानियों को याद कर उनके बलिदान को नमन करते हैं।

हमारे प्राथमिक शिक्षक महाविद्यालय में भी झंडोत्तोलन और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम बेहद रोचक और प्रेरणादायक रहे। इनमें से एक **नाटक** ने मुझे गहराई से प्रभावित किया।

नाटक का संदेश यह था कि भले ही हमें आज़ादी मिल चुकी है, परंतु हम अभी भी पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हैं। आज भी समाज में **भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, तस्करी और अन्य बुराइयाँ** व्याप्त हैं, जिनसे आम नागरिक अपने अधिकारों से वंचित हो जाते हैं।

निष्कर्ष :

जहाँ भी भ्रष्टाचार और अन्याय दिखाई दे, वहाँ समाज, युवा और नागरिकों को मिलकर आंदोलन करना चाहिए। तभी हमारा भारत वास्तव में **पूर्ण स्वतंत्र और समृद्ध** बन पाएगा।

जय हिन्द!

अमन बा
प्रथम वर्ष 'ब'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

15 अगस्त हमारे देश की स्वतंत्रता और बलिदानों का दिन है। हमारे महाविद्यालय में इस अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मिस्सा पूजा से हुई।

झंडोतोलन के बाद विद्यार्थियों ने देशभक्ति नाटक प्रस्तुत किया, जिसमें यह दिखाया गया कि भारत अब गुलामी की जंजीरों से पूरी तरह मुक्त हो चुका है। यह नाटक बहुत प्रेरणादायक था और हमें यह संदेश देता है कि स्वतंत्रता केवल आज़ादी का प्रतीक ही नहीं, बल्कि अपने देश को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी भी है।

इस अवसर पर तीन भाषण प्रस्तुत किए गए, जिनमें देश की उन्नति और प्रगति के लिए जागरूकता, आत्म-सुधार और एकता पर विशेष जोर दिया गया।

इस दिन ने मुझे यह सिखाया कि देश को आगे बढ़ाने के लिए हमें पहले स्वयं में बदलाव लाना होगा और एक अच्छे नागरिक के रूप में जिम्मेदारी निभानी होगी।

आकांक्षा टुडू
प्रथम वर्ष 'अ'

15 अगस्त का अनुभव

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से आज़ाद हुआ। यह दिन हर भारतीय के लिए गर्व और खुशी का प्रतीक है।

हमारे महाविद्यालय में भी 15 अगस्त 2025 को यह दिवस मनाया गया। सुबह 7:30 बजे पवित्र मिस्सा हुई, जो भक्तिभाव से सम्पन्न हुई। इसके बाद प्राचार्य महोदय ने ध्वजारोहण किया और सभी ने मिलकर राष्ट्रीय गान गाया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गीत, नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए, जिनसे यह संदेश मिला कि भारत विविधताओं से भरा देश है, फिर भी हम सभी एक हैं। यह अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय और प्रेरणादायक रहा।

अनिवेश डुंगडुंग
प्रथम वर्ष 'अ'

15 अगस्त का अनुभव

हमारा देश भारत **15 अगस्त** 1947 को ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। यह दिन हर भारतीय के लिए **गौरव और सम्मान** का प्रतीक है।

15 अगस्त 2025 (शुक्रवार) को हमारा स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उस दिन सुबह 7:30 बजे कार्यक्रम की शुरुआत **पवित्र मिस्सा** से हुई, क्योंकि उसी दिन ईसाई धर्म में *माता मरियम स्वर्गारोहण पर्व* भी मनाया जाता है। यह क्षण मुझे बहुत ही भक्तिमय और आध्यात्मिक लगा।

इसके बाद 8:45 बजे झंडोतोलन किया गया। मुख्य अतिथि हमारे कॉलेज के प्राचार्य फा. पी. जे. जेम्स थे। झंडोतोलन के बाद विद्यार्थियों ने अनुशासित रूप से परेड प्रस्तुत की, जिसे देखकर मन गर्व से भर गया। उसके बाद **सांस्कृतिक कार्यक्रम** हुए, जिनमें नृत्य, गीत, और नाटक प्रस्तुत किए गए। प्रत्येक कार्यक्रम से कोई-न-कोई प्रेरक संदेश मिला। हमें यह भी अनुभव हुआ कि हमारा देश **विविधताओं में एकता** का प्रतीक है — *हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई — सब भाई-भाई हैं।*

इस प्रकार हमारा **15 अगस्त** 2025 का उत्सव बहुत ही हर्षोल्लास और प्रेरणा के साथ संपन्न हुआ।

अनीश होरो
प्रथम वर्ष 'ब'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 15 अगस्त का कार्यक्रम बड़े ही भव्य और भक्तिपूर्ण ढंग से मनाया गया। सुबह मिस्सा पूजा का आयोजन हुआ, जिसमें सभी ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। इसके बाद मार्च-पास्ट हुआ, जिसने मुझे अपने बचपन की विद्यालयीय परेड की याद दिलाई।

परेड के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिनमें नृत्य, गीत और नाटकों के माध्यम से देशभक्ति और सामाजिक संदेश प्रस्तुत किए गए। एक स्किट से यह प्रेरणा मिली कि शिक्षा, नेतृत्व और जिम्मेदारी से ही राष्ट्र का विकास संभव है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फा. पी. जे. जेम्स ने तिरंगा फहराया और सभी ने झंडे को सलामी दी। यह दिन मेरे लिए अविस्मरणीय और प्रेरणादायक रहा।

अंजु आईन्द
प्रथम वर्ष 'अ'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

हमारा भारत देश **15 अगस्त** 1947 को स्वतंत्र हुआ। तभी से हम सभी भारतवासी हर वर्ष **15 अगस्त** को स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। इस वर्ष भी हमारे महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। हम सभी विद्यार्थियों ने महाविद्यालय प्रांगण में अनुशासित रूप से परेड प्रस्तुत की। बैंड की धुन के साथ कदम मिलाकर चलते हुए परेड का वातावरण और भी सुंदर और आकर्षक बन गया। इसके पश्चात् विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में प्रस्तुत एक **नाटक** ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। उस नाटक से यह संदेश मिला कि हमारा देश भले ही राजनीतिक रूप से स्वतंत्र है, परंतु हम अब भी मानसिक और सामाजिक बंधनों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। आज भी हमारे समाज में **भ्रष्टाचार, अन्याय और शोषण** जैसी बुराइयाँ मौजूद हैं।

इसलिए हमें, विशेषकर युवाओं को, संकल्प लेना होगा कि हम अपने देश को इन बुराइयों से मुक्त करके एक **स्वच्छ और भ्रष्टाचार-मुक्त भारत** का निर्माण करेंगे।

रोशन लकड़ा
प्रथम वर्ष 'ब'

स्वतंत्रता दिवस का अनुभव

स्वतंत्रता दिवस की तैयारी और उत्साह:- हम सभी ने पूरी लगन से स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया। महाविद्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस गर्व के साथ मनाया गया। इस दिन की खुशियाँ अपनी चरम सीमा पर थीं, क्योंकि हम सभी ने लंबे इंतज़ार के बाद इस समारोह की तैयारी में कई दिनों तक मेहनत की थी।

हमारी सहभागिता:- हम तीनों यूनिट के विद्यार्थी मिलकर पूरे आत्मविश्वास और उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिए। महाविद्यालय के प्रांगण में तिरंगा फहराया गया, परेड की गई, और देशभक्ति से ओत-प्रोत नृत्य व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मैं देशभक्ति नाटक में भाग ली, जिसमें मैंने "भारत माता" की भूमिका निभाई—शुरुआत में थोड़ा डर था, पर मैम ने मुझे हौसला दिया कि "मैं भी सबके सामने कुछ कर सकती हूँ", और फिर मैंने आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का समापन:- हम सभी की सहभागिता ने कार्यक्रम को सफल और यादगार बना दिया। अंत में महाविद्यालय के प्रांगण में परेड का विसर्जन किया गया, जिससे समारोह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नफ़रत एक बुरी चीज है, न पालो इसे,
दिलों में नफरत है, निकालो इसे,
न तेरा मेरा कर, न इसका उसका कर,
ये सभी का वतन है, संभालो इसे।

हिना यासमीन
द्वितीय वर्ष 'ब'

15 अगस्त 2025: मेरा अनुभव

प्रत्येक वर्ष की भाँति, हमारे महाविद्यालय में **स्वतंत्रता दिवस** का उत्सव धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया। इस वर्ष हमने तीनों विद्यालयों की एकता का प्रदर्शन करते हुए, अपनी-अपनी टीमों में विभाजित होकर शानदार परेड का आयोजन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से इस राष्ट्रीय पर्व का रंग-रूप और भी जीवंत हो उठा—देशभक्ति गीतों, नृत्य प्रदर्शन और नाट्य प्रस्तुतियों ने सभी के अंदर देश-प्रेम की भावना जगाई। इस दिन हमने वीर शहीदों को अपने हृदय से नमन किया और उनके त्याग एवं बलिदान को नहीं भूलने एवं हमेशा याद रखने की सशक्त शपथ ली।

इस वर्ष शिक्षा जगत के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी हमने नवीन रूप से दृढ़ किया—हमने एक साथ मिलकर देश में शिक्षा के व्यापक प्रसार का प्रण लिया, ताकि हर नागरिक साक्षर हो और समाज, राज्य तथा देश का समग्र कल्याण सुनिश्चित हो सके।

एलिसा तिर्की
द्वितीय वर्ष 'ब'

स्वतंत्रता दिवस

मेरा देश है सबसे प्यारा
15 अगस्त को गूँजा नारा
PTEC के प्रांगण में
ड्रम के मधुर धुन में
परेड करते लाल, हरा, पीला, नीला दल से
गुजरते हैं झंडे को सलामी देते मन से
चाहे हिंदू हो या मुस्लिम हो
ईसाई हो या सिख हो
सभी लोग एकत्र होकर
सम्मान करते झंडे को सलामी देकर
मेरा देश है सबसे प्यारा
मेरा देश है सबसे न्यारा
स्वतंत्रता का है जश्न मनाएँ
एक-दूसरे को सच्चाई का पाठ पढ़ायें
शहीदों को हम दिल से याद करें
हम सभी मिलकर उनका सम्मान करें।

अनिमा टोप्पो
द्वितीय वर्ष 'ब'

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त को फहरता है तिरंगा
अपनी पूरी शान से
हम भारतवासियों को मिली आजादी
वीर शहीदों के बलिदान से

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी
हम PTEC परिवार दिए तिरंगे को सलाम
न तन से प्यार
न धन से प्यार
बस हमें अपने वतन से प्यार

करते हैं हम उन वीरों को नमन
जो देश के लिए हुए कुर्बान
आज आ ही गया वो दिन
हर शहीदों को नमन

एकता में ही अनेकता है देश की शान
हर धर्म हर जाति का करता सम्मान
इसलिए तो है मेरा भारत देश महान
जय हिंद जय भारत

अल्फा कुजूर
द्वितीय वर्ष 'ब'

खेल : संघर्ष की कहानी

खेल कहूँ तो छोटा शब्द लगता है पर इसका विस्तृत अर्थ भी है। खेल को शिक्षा के साथ भी जोड़ा गया है। खेल के माध्यम से मानसिक शक्ति, एकाग्रता, शारीरिक विकास एवं टीम स्पीरिट विकसित होता है। खेल से व्यक्ति में चंचलता, दृढ़ निश्चयी और धैर्य बनी रहती है।

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर PTEC बनाम SSC के बीच फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया था जोकि काफी बेहतरीन मैच साबित हुआ। दोनों ही टीमों ने अपना शानदार प्रदर्शन से दर्शकों का दिल बहलाया। शुरुआत के १ मिनट के अंदर ही PTEC ने दो गोल खाकर मुंह के बल जमीन में गिरा। लेकिन PTEC टीम का मनोबल कम नहीं हुआ, वे धैर्य के साथ SSC के धर्मभाइयों को कड़ी मुकाबला देते रहे। हमारी टीम आक्रमण करते हुए SSC को दो गोल को बराबर कर दिए। खेल के अंत तक में SSC ने और दो गोल मारकर अपनी जगह कायम रखा। खेल में हार जीत दो पहलू है। हार और जीत तो होती रहती है।

मेरा यह मानना है जीतने वाला जीत का जश्न मानता है लेकिन हारने वाला अपनी गलतियों से सीखकर अगले चाल की तैयारी करता है आखिर हार कर जीतने वाले को ही बाजीगर कहते हैं।

सचिन मारंडी
द्वितीय वर्ष 'ब'

Experience of Football Match

Football is one of the most popular games in the world, and it is also one of my favourites. A football match was played between our college boys and the SCC brothers. While watching the game, I felt very excited and enjoyed it a lot.

In the beginning, our college team was not fully prepared, and as a result, they conceded two goals. But after that, our boys became stronger, used their energy wisely, and started playing very well. I watched the match with great interest and supported my college team with full enthusiasm.

Football is not only a source of enjoyment but also a game that keeps our body healthy and fit. Although our college team did not win the match, we learned something valuable. Failure teaches us important lessons, and it motivates us to do better in the future.

Susana Cherowa

स्वतंत्रता दिवस फुटबॉल मुकाबला

स्वतंत्रता दिवस, यानी 15 अगस्त—हमारे महाविद्यालय में आज यही दिन था जो शान और जोश से भरा था। इस अवसर पर पीटीसी बनाम एसएससी के बीच फुटबॉल मैच हुआ, और यह वास्तव में हम सभी के लिए अविस्मरणीय रहा।

मैच से पहले ही प्रशंसकों और खिलाड़ियों में जबरदस्त उत्साह था। दर्शकों ने चिल्लाकर एवं ताली बजाकर खिलाड़ियों का हौंसला बढ़ाया और पूरे वातावरण को ऊर्जा से भर दिया। शुरुआत में ही एसएससी की टीम ने दो गोल मारकर अपनी ताकत दिखाई।

चीजें धीरे-धीरे बदलने लगीं। संयम, सहनशीलता और टीम भावना से पीटीईसी ने मुकाबले में वापसी की और बराबरी हासिल की। अंत में एसएससी ने दो और गोल कर मैच अपनी पकड़ में कर लिया।

खेल में हार-जीत तो स्वाभाविक हैं, लेकिन असली मूल्य उन खिलाड़ियों की हिम्मत में है, जिन्होंने हार के बावजूद आत्मगौरव और सकारात्मकता से परिणाम स्वीकार किया। जैसा कि एक प्रेरणादायक कथन कहता है:

"हारने से डरना नहीं चाहिए बल्कि हारने के बाद उठने का साहस होना चाहिए।"

स्नेहा हेंब्रोम
प्रथम वर्ष 'ब'

15 अगस्त का फुटबॉल मुकाबला

15 अगस्त के दिन परेड के बाद संत स्तानिस्लास कॉलेज के मैदान में एक फुटबॉल मैच आयोजित था। दोनों टीमें—पीटीसी बनाम एसएससी खेलने को लेकर बहुत उत्साहित थीं। मैंने जाकर उन्हें प्रोत्साहित किया और साथ में उत्साह बढ़ाया, जिससे माहौल और भी जीवंत हो गया।

खेल की शुरुआत के कुछ ही समय बाद पीटीसी टीम ने दो गोल खाये , जिससे हमारी टीम थोड़ी निरुत्साहित हो गई। लेकिन, टीम का हौसला डगमगाया नहीं। वे संयम बनाए रखते हुए खेल में लौट आए और आक्रमण जारी रखा। उन्होंने दो गोल किए और मुकाबला बराबरी पर ला दिया। अंत तक एसएससी ने दो और गोल कर अपनी पकड़ बनाए रखी। आखिरकार हमारी टीम चार के मुक़ाबले तीन गोल ही कर पायी और एक गोल से मैच हार गयी।

खेल में हर परिस्थिति में परिपक्वता दिखना आवश्यक है—हार और जीत जीवन का हिस्सा हैं। मेरा मानना है कि विजेता जीत का जश्न मनाता है, और जो हारता है, वह अपनी गलतियों से सीखकर अगली बार तैयारी करता है।

संजय बड़ा
द्वितीय वर्ष 'ब'

फुटबॉल मैच का अनुभव

15 अगस्त 2025, दिन शुक्रवार को पूरे देश के साथ-साथ हमारे **PTEC महाविद्यालय** में भी स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के बाद हमारे प्रशिक्षणार्थियों और **SSC भाइयों** के बीच एक मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच आयोजित किया गया।

खेल लगभग **11:15 बजे** आरंभ हुआ। शुरूआती समय में SSC टीम ने लगातार दो गोल कर दिए, जिससे हमें थोड़ी निराशा हुई। लेकिन कुछ देर बाद हमारी टीम ने एक गोल कर दिया और माहौल उत्साहपूर्ण हो गया। दर्शकगण तालियाँ बजाकर और बैंड-बाजे के साथ खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा रहे थे।

पहले हाफ के बाद धर्मबहनों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया, जिसने सभी का मन मोह लिया। इसके बाद खेल पुनः शुरू हुआ। हमारी टीम ने एक और गोल किया, लेकिन अंत में SSC भाइयों ने चौथा गोल दागकर मैच अपने नाम कर लिया।

हालाँकि हमारी टीम हार गई, फिर भी यह मैच बेहद रोमांचक और यादगार रहा। खिलाड़ियों का **जुनून, टीम भावना और अनुशासन** देखकर मुझे बहुत प्रेरणा मिली।

प्रताप पूर्ति
प्रथम वर्ष 'अ'

एक हरे-भरे मैदान में फुटबॉल का जज़्बा

सुनसान जंगलों के बीचों-बीच फैले एक हरे-भरे, समतल मैदान ने उस दिन एक अलौकिक माहौल बना दिया था। जब पूर्व में से **एस॰एस॰सी. के ब्रदर्स** मैदान में उतरे और पश्चिम से **पी॰टी॰ई॰सी. के प्रशिक्षणार्थी**, दोनों ही टीमों की आँखों में जीत की ज्योति थी। मैच की शुरुआत ही रोमांचक थी। **ब्रदर्स** ने तीव्र ऊर्जा से दो गोल दागे, जिसका प्रभाव साफ देखा जा सकता था। लेकिन पी॰टी॰ई॰सी. टीम हार नहीं मानी। उन्होंने धैर्य, एकजुटता और वफादारी के साथ खेल जारी रखा और एक-एक गोल करके बराबरी हासिल की। खेल के बीच में, मैदान के किनारे **माँ मरियम** को सम्मानित करते हुए 'मारिया नृत्य' की प्रस्तुति भी हुई, उसकी सामूहिकता और सौंदर्य ने दर्शकों के दिल को छू लिया। प्रशिक्षक, दोनों टीमों के फादर, प्रशंसा और सवालों भरे संवाद से खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते रहे, जिससे हर खिलाड़ी में विश्वास और प्रयास की भावना जन्मी। और मौसम, वाह, कितना सुहावना था! हल्की हवा, प्राकृतिक ठंडक और हरे पेड़ों की छाँव ने एक उपयुक्त वातावरण तैयार किया। इस प्राकृतिक सेटिंग में खेलना न केवल मनोरंजक था, बल्कि मन को शांति और ताजगी से भर देने वाला अनुभव था।

अंत में, मुझे एहसास हुआ, हार या जीत से ज्यादा महत्वपूर्ण है खुद को भूलकर उस पल में जीना। हमारे लिए इस तरह का खेल देखना किसी सौभाग्य से कम नहीं था।

सबिना ओड़ेया
प्रथम वर्ष 'ब'

फुटबॉल मैच का अनुभव

आज दिनांक **15 अगस्त 2025, दिन शुक्रवार** को स्तानिस्लास कॉलेज प्रांगण में एक भव्य **फुटबॉल मैच** आयोजित किया गया। यह मैच **ब्रदर्स टीम** और **PTEC टीम** के बीच खेला गया।

मैच का उद्घाटन हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. पी. जे. जेम्स** द्वारा प्रार्थना और शुभकामनाओं के साथ किया गया। ठीक **11:10 बजे** खेल आरम्भ हुआ। दोनों टीमों ने अपने-अपने स्थान ग्रहण किए – **PTEC टीम नीली जर्सी में** पूरब दिशा में तथा **ब्रदर्स टीम सफेद जर्सी में** पश्चिम दिशा में उतरी।

खेल शुरू होते ही ब्रदर्स टीम ने आक्रामक अंदाज दिखाया और शुरुआती पाँच मिनटों में ही लगातार **दो गोल दाग दिए**। इससे मैच का स्कोर **2–0** हो गया। हालांकि कुछ ही देर बाद PTEC टीम ने वापसी करते हुए एक गोल किया और स्कोर **2–1** कर दिया। इसके साथ ही पहला हाफ समाप्त हुआ।

हाफ टाइम में विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सिस्टर्स द्वारा गीत गाए गए और **भरतनाट्यम नृत्य** ने दर्शकों का मन मोह लिया। दर्शकगणों ने उत्साहपूर्वक तालियाँ बजाकर कलाकारों का स्वागत किया।

थोड़ी देर बाद दूसरा हाफ शुरू हुआ। ब्रदर्स टीम ने शुरुआत में ही एक और गोल दागा, जिससे स्कोर **3–1** हो गया। लेकिन PTEC टीम ने हार नहीं मानी और जोरदार प्रयास से एक और गोल कर स्कोर **3–2** तक पहुँचा दिया। खेल का रोमांच बढ़ता गया और मैदान में खिलाड़ियों का **जुनून, जोश और एकता** स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

मैच के अंतिम क्षणों में ब्रदर्स टीम ने एक और गोल कर दिया, जिससे स्कोर **4–2** हो गया। अंततः **ब्रदर्स टीम विजयी रही** और ट्रॉफी पर कब्ज़ा जमाया। मैच का समापन समोसा और जलेबी के स्वादिष्ट नाश्ते के साथ हुआ।

यह फुटबॉल मैच वाकई **शानदार, सराहनीय और रोमांचक** था। यद्यपि हमारी टीम हार गई, लेकिन उनके प्रदर्शन से हमने यह सीखा कि परिश्रम, एकता और आत्मविश्वास से हम आगे और बेहतर कर सकते हैं। अगली बार हमें और भी अच्छी तैयारी करनी होगी।

सुचित मार्कस तिग्गा
प्रथम वर्ष 'अ'

फुटबॉल मैच का अनुभव

15 अगस्त भारतवर्ष के लिए अत्यंत खुशी और गर्व का पर्व है। इस दिन को हम भारतवासी बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस शुभ अवसर पर हमारे महाविद्यालय में PTEC और SSC **की टीम** के साथ फुटबॉल मैच का आयोजन भी होता है। इस साल भी फुटबॉल मैच का आयोजन हुआ।

मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि खेल केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि आपसी मेल-मिलाप, प्रेम, अनुशासन और जुनून को भी प्रकट करता है। खेल में सभी खिलाड़ी मिलकर एक ही लक्ष्य के लिए संघर्ष करते हैं और यहीं से टीम भावना का विकास होता है।

मैच के दौरान अनेक रोचक दृश्य देखने को मिले। जब भी गोल होता, खिलाड़ी ही नहीं बल्कि दर्शक भी बच्चों की तरह खुशी से झूम उठते। मैंने देखा कि बड़े-बड़े लोग भी तालियाँ बजाकर और नाचकर उत्साह व्यक्त कर रहे थे। यह क्षण बहुत ही आनंददायक था और मुझे अपार खुशी मिली।

इस खेल से मुझे यह शिक्षा मिली कि खेल वास्तव में हमारी **जीवन-शैली** का हिस्सा होना चाहिए। यह हमें सिखाता है कि हमेशा सजग और तैयार रहना चाहिए, क्योंकि कभी भी अप्रत्याशित परिस्थिति सामने आ सकती है। हमारे खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा हुआ – एक ही मिनट में दो गोल हो गए क्योंकि वे उस समय पूरी तरह तैयार नहीं थे।

जीवन में हार और जीत लगी रहती है। हार से निराश होने के बजाय हमें अपनी गलतियों से सीखना चाहिए और अगली बार उन्हें सुधारकर और बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए। वास्तव में **जो हार को स्वीकार करता है और हार से सीखकर आगे बढ़ता है, वही सच्चा बाजीगर कहलाता है।**

इस फुटबॉल मैच ने मुझे न केवल आनंद दिया बल्कि जीवन के लिए महत्वपूर्ण संदेश भी दिया।

रॉबिन्सन बेक
प्रथम वर्ष 'अ'

रिश्तों की हकीकत

आदमी जब पत्तल में खाना खाता था
मेहमान को देख वह हरा हो जाता था
स्वागत में पूरा परिवार बिछ जाता था।

बाद में जब वह मिट्टी के बर्तन में खाने लगा
रिश्तों को जमीन से जुड़कर निभाने लगा।

फिर जब पीतल के बर्तन उपयोग में लेता था
रिश्तों को साल, 6 महीने में चमका लेता था।

लेकिन बर्तन काँच के जब से बरतने लगे
एक हल्की सी चोट में रिश्ते बिखरने लगे

अब बर्तन थर्मोकोल पेपर के इस्तेमाल होने लगे
सारे सम्बन्ध भी अब Use & Throw होने लगे।

व्याख्याता
डोली लकड़ा

PRIMARY TEACHERS' EDUCATION COLLEGE

Gurwa, PO Sitagarha, Dist. Hazaribag 825 303, Jharkhand, INDIA
(A Christian Minority Institution under the Hazaribag Jesuits Education Society: Estd: 1958)
Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997.
Mob. 8987903798 (O) 9835358073 (P) Email: info@ptecgurwa.org Website: www.ptecgurwa.org